



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग III—खंड 4
PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 10]

नई दिल्ली, मंगलवार फरवरी 21, 1995/फाल्गुन 2, 1916

No. 10] NEW DELHI, TUESDAY, FEBRUARY 21, 1995/PHALGUNA 2, 1916

वि इन्स्टीट्यूट ऑफ कम्पनी सेक्रेटरीज ऑफ इंडिया

अधिसूचना

नई दिल्ली, 21 फरवरी, 1995

संख्या 710/1(एम) 17:—जबकी कम्पनी सचिव विनियमावली, 1982 में और संशोधन करने के लिए विनियमों के प्रारूप कम्पनी सचिव अधिनियम, 1980 (1980 का 56) की धारा 39 की उपधारा (3) में यथा अपेक्षित भारत के असाधारण राजपत्र, भाग III, खंड 4 में दि इन्स्टीट्यूट ऑफ कम्पनी सेक्रेटरीज ऑफ इंडिया की दिनांक 20 सितम्बर, 1994 की अधिसूचना के अन्तर्गत इनके द्वारा प्रभावित हो सकने वाले व्यक्तियों से भारत के राजपत्र में यथा प्रकाशित उक्त अधिसूचना की प्रतियां सर्व साधारण को उपलब्ध कराए जाने की तारीख से 45 दिन की समाप्ति से पूर्व आपत्तियों और सुझाव आमंत्रित करने के लिए प्रकाशित किए गए थे।

और जबकि उक्त राजपत्र की प्रतियां दिनांक 29 सितम्बर, 1994 को सर्व साधारण को उपलब्ध कराई गई थीं।

और जबकि सर्व साधारण से प्राप्त आपत्तियों और सुझावों पर परिषद द्वारा विचार किया गया है।

अब जब कम्पनी सचिव अधिनियम, 1980 (1980 का 56) की धारा 39 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, परिषद केन्द्रीय सरकार के अनुमोदन से कम्पनी सचिव विनियमावली, 1982 में और संशोधन करने के लिए एतद् द्वारा निम्नलिखित विनियम बनाती है, अर्थात् :—

1. (1) इन विनियमों को कम्पनी सचिव (संशोधन) विनियमावली, 1995 कहा जाएगा।

(2) यह विनियम भारत के राजपत्र में प्रकाशित होने की तारीख से लागू होंगे।

2. कम्पनी सचिव विनियमावली, 1982 में :—

(क) अध्याय-VII में विनियम 55क के बाद निम्नलिखित निविष्ट किया जायेगा, अर्थात् :—

अध्याय VII क

अर्हक पश्च पाठ्यक्रम और परीक्षाएं

55ख. अर्हता पश्च पाठ्यक्रम और परीक्षाएं :

परिषद व्यावहारिक और/या सैद्धान्तिक प्रशिक्षण दे सकती है या उसकी व्यवस्था कर सकती है और ऐसे

विषयों में परीक्षा ले सकती है यह सदस्यों के लिए उपयोगी समझती हो और इस अध्याय के उपबन्धों के अनुसार इस संबंध में प्रमाणपत्र या डिप्लोमा प्रदान कर सकती है।

पूँजी बाजार और वित्तीय सेवाओं में सवस्यता पश्चात अर्हता पाठ्यक्रम

55ग. पूँजी बाजार और वित्तीय सेवा पाठ्यक्रम की स्कीम, पूँजी बाजार और वित्तीय सेवाएं पाठ्यक्रम के निम्नलिखित भाग होंगे, अर्थात् :—

- (क) पाठ्यक्रम के भाग I के समूह 1, 200 अंकों का और 300 अंकों का समूह 2 होगा; और
- (ख) पाठ्यक्रम के भाग II में 150 अंकों का शोध प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट भी शामिल होगी और 50 अंकों का साक्षात्कार होगा।
- (2) भाग I के लिए अभ्यर्थियों की दो समूहों में पांच विषयों में परीक्षा ली जाएगी और प्रत्येक समूह में निम्नलिखित प्रश्न पत्र होंगे, अर्थात् :—

समूह 1 :

- प्रश्न पत्र 1 वित्तीय प्रबन्ध—अवधारणाएं, मुद्दे और व्यवहार
- प्रश्न पत्र 2 : वित्तीय सेवाएं, वित्तीय बाजार और वित्तीय उत्पाद।

समूह 2 :

- प्रश्न पत्र-3 प्रतिभूति मूल्यांकन और निवेश प्रबन्ध
- प्रश्न पत्र-4 पोर्ट फोलियो मैनेजमेंट और पारस्परिक निधियां
- प्रश्न पत्र-5 अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रबन्ध—अवधारणा, पूँजी बाजार और लिखत

(3) पूँजी बाजार और वित्तीय सेवाएं पाठ्यक्रम के भाग I का पाठ्य विवरण अनुसूची घ में विनिर्दिष्ट किया गया है।

55घ. प्रशासन—विनियम 100 में जो कुछ भी निहित है उसके होते हुए भी पूँजी बाजार एवं वित्तीय सेवाओं संबंधी पाठ्यक्रम परिषद द्वारा अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2) (इस अध्याय में “समिति” के रूप में निर्दिष्ट) के अन्तर्गत प्रयोजन के लिए गठित समिति के अधीन होगी जिसका कार्य परीक्षा आयोजित करना, उसमें प्रवेश देना, परीक्षकों की नियुक्ति और चयन अभ्यर्थियों के मार्गदर्शन के लिए पुस्तकों का निर्धारण, परीक्षाफल की घोषणा और अन्य संबंधित विषय होंगे।

55ङ. सलाहकार बोर्ड :—समिति एक सलाहकार बोर्ड नियुक्त कर सकती है जिसमें सात से अधिक व्यक्ति नहीं होंगे जो समिति को पाठ्य विवरण, परीक्षाओं, शोध प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट से संबंधित मामलों और पूँजी बाजार तथा वित्तीय सेवाओं से संबंधित पाठ्यक्रम से जुड़े किसी अन्य मामले, समिति जैसा भी इसे निर्दिष्ट करें, सलाह देगा।

55च. पूँजी बाजार तथा वित्तीय सेवाओं विषयक पाठ्यक्रम में प्रवेश :—(1) किसी भी अभ्यर्थी को पूँजी बाजार तथा वित्तीय सेवाओं विषयक पाठ्यक्रम में तब तक प्रवेश नहीं दिया जायगा जब तक वह उक्त पाठ्यक्रम में प्रवेश के समय इंस्टीट्यूट का सदस्य नहीं है।

(2) किसी भी अभ्यर्थी के लिए जो पूँजी बाजार तथा वित्तीय सेवाओं विषयक पाठ्यक्रम के लिए आवेदन करता है उसे उपयुक्त फार्म में पंजीकरण शुल्क, वार्षिक शुल्क सहित यदि लागू हो, तथा प्रदान की जाने वाली सेवाओं के संबंध में परिवर्ध द्वारा समय-समय पर निर्धारित अन्य शुल्क देना अपेक्षित होगा।

55छ. पूँजी बाजार तथा वित्तीय सेवाओं विषयक पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए समय सीमा : (1) पंजीकरण अवधि-प्रत्येक अभ्यर्थी जो पूँजी बाजार या वित्तीय विषयक पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए आवेदन करता है, उसे इस अध्याय के अन्तर्गत विनियमों के अनुसार उस महीने से पांच वर्ष की अवधि के लिए पंजीकृत कराया जाएगा, जब उसका सभी तरह से पूर्ण आवेदन इंस्टीट्यूट द्वारा पंजीकरण के लिए स्वीकार किया जाता है।

(2) परीक्षा पूरी करने के लिए समय सीमा : कोई भी अभ्यर्थी जिसे उपविनियम (1) के अन्तर्गत पंजीकृत किया जाता है, उसे, यथास्थिति, पंजीकरण की अवधि के अन्तर परीक्षा पूरी करनी होगी और शोध प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी।

(3) पंजीकरण की समाप्ति—किसी अभ्यर्थी का पंजीकरण पांच वर्ष की समाप्ति पर या उस वर्ष के अन्त में जिसमें अभ्यर्थी ने उपरोक्त पूँजी बाजार और वित्तीय सेवाओं संबंधी पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा किया है। इनमें जो भी पहले हो, समाप्त हो जाएगा।

बशर्ते कि समिति ऐसे मार्गदर्शी सिद्धांतों के अधीन जैसा कि परिषद इस निमित्त निर्धारित करे, किसी अभ्यर्थी के पंजीकरण की अवधि इस अध्याय के अन्तर्गत पांच वर्ष से अधिक के लिए बढ़ा सकती है।

55ज. पूँजी बाजार एवं वित्तीय सेवाएं विषयक परीक्षा में प्रवेश—किसी भी सवस्य को पूँजी बाजार एवं वित्तीय सेवाएं विषयक परीक्षा के भाग 1 में तब तक प्रवेश नहीं दिया जायगा जब तक कि—

(क) उसने परीक्षा आरंभ होने वाले महीने से कम से कम 6 महीने पहले विनियम 55छ के अन्तर्गत अपना नाम दर्ज न करा लिया हो, उदाहरण के लिए यदि परीक्षा दिसम्बर में आरंभ होती है तो जिस अभ्यर्थी का नाम उस कैलेंडर वर्ष के मई महीने तक, जिसमें मई का महीना भी शामिल है, वह इस परीक्षा में बैठने का पात्र होगा।

(ख) उसने परीक्षा में प्रवेश के लिए उपयुक्त फार्म में जिसकी प्रतियाँ अभ्यर्थी को स्वयं तैयार करनी होंगी, अपेक्षित विवरणों और परिषद द्वारा समय-समय पर ही निर्धारित शुल्क सहित समिति द्वारा दिए गए निदेशों के अनुसार इंस्टीट्यूट को आवेदन न किया हो।

55क. परीक्षा की अपेक्षाएं:—(1) इस अध्याय के अन्तर्गत पंजीकृत अभ्यर्थी को परीक्षाओं और शोध प्रबन्धक या परियोजना रिपोर्ट से संबंधित ऐसी शर्तों की अनुपालना की अपेक्षा होगी जो परिषद द्वारा समय-समय पर निर्धारित की जाती है।

(2) परीक्षा में प्रवेश, निष्कासन और परीक्षाफल को रोकना:—

(क) ऐसे कारणों से जो लिखित रूप में अभिलिखित किए जाएंगे के लिए इसके द्वारा इस निमित्त प्राधिकृत समिति या कोई व्यक्ति—

- (i) विनियम 55छ के अन्तर्गत पंजीकृत अभ्यर्थी को किसी परीक्षा में प्रवेश के लिए इंकार कर सकता है; या
- (ii) ऐसी शर्तों के अधीन उसे परीक्षा में प्रवेश दे सकता है जिसे यह या वह किसी मामले की परिस्थितियों में युक्तिसंगत समझें, या
- (iii) सामान्य प्रक्रिया में प्रवेश हो जाने के बाद भी परीक्षा भवन से उसे निष्कासित कर सकता है।

(ख) इस तथ्य के बावजूद कि किसी अभ्यर्थी ने किसी परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए न्यूनतम ग्रेड प्राप्त कर लिया है, समिति ऐसे कारणों से जो लिखित रूप में अभिलिखित किए जाएंगे, परीक्षाफल को रोक सकती है।

(ग) समिति द्वारा प्राधिकृत व्यक्ति द्वारा पारित किसी भी आदेश की समीक्षा इसके द्वारा की जाएगी और समिति द्वारा पारित किसी आदेश की समीक्षा परिषद द्वारा की जाएगी।

55ज. परीक्षा या शोध प्रबन्ध/परियोजना रिपोर्ट, परीक्षा-फल या पंजीकरण का निलम्बन या निरसन—इस अध्याय के अन्तर्गत पंजीकृत किसी पंजीकृत अभ्यर्थी द्वारा कदाचार की स्थिति में, परिषद या समिति से शिकायत के प्राप्त होने पर स्वेच्छा से यदि परिषद को यह समाधान हो जाता है कि ऐसी जांच जो यह ठीक समझे, के पश्चात्, कदाचार साबित हो जाएगा और ऐसे अभ्यर्थी को अपना पक्ष प्रस्तुत करने के लिए एक अवसर देने के बाद अभ्यर्थी को किसी एक या अधिक परीक्षाओं में शामिल होने या शोध-प्रबन्ध/परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत करने से निलम्बित या वंचित कर सकती है, या इसकी परीक्षा या शोध-प्रबन्ध/परियोजना रिपोर्ट को निरस्त कर सकती है या यथा स्थिति इस अध्याय के अन्तर्गत उसके पंजीकरण को निरस्त और भविष्य में पंजीकरण के लिए उसे वंचित कर सकती है।

स्पष्टीकरण—इस विनियम के प्रयोजनों के लिए कदाचार के अन्तर्गत इंस्टीट्यूट या परीक्षा परिसर के अन्दर या नजदीक उपद्रवी व्यवहार, इंस्टीट्यूट द्वारा आयोजित किसी भी परीक्षा में अनुचित साधनों का प्रयोग या प्रयोग करने की कोशिश करना, शोधप्रबन्ध/परियोजना रिपोर्ट को तैयार करने में जैसे नकल करना, विद्यमान साहित्य या स्रोतों से किसी सामग्री या उसकी यथोचित अभिव्यक्ति किये बिना प्रतिकृति और समिति द्वारा समय-समय पर निर्धारित बातें सम्मिलित होंगी।

55ट. परीक्षा का आयोजन:—1. परीक्षा ऐसे अंतरालों पर, ऐसे ढंग से और ऐसे समय व स्थानों पर जैसा कि परिषद परीक्षा के लिए दर्ज अभ्यर्थियों की न्यूनतम ऐसी संख्या की उपलब्धता पर जैसा कि परिषद समय-समय पर निर्धारित करे के अधीन आयोजित की जा सकती है।

(2) परीक्षा की तारीख एवं स्थान तथा अन्य विवरण पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे।

55ठ. परीक्षा शुल्क की वापसी या विनियोजन—

1. किसी अभ्यर्थी को एक बार जब किसी परीक्षा के लिए प्रवेश प्रमाण पत्र जारी कर दिया जाता है वह किसी भी परिस्थितियों में उसके द्वारा भुगतान किए गए शुल्क की वापसी का पात्र नहीं होगा।

2. जहां, तथापि, कोई अभ्यर्थी परीक्षा की अंतिम तारीख के पन्द्रह दिनों के अन्दर इंस्टीट्यूट को परीक्षा शुल्क का अगली परीक्षा के लिए विनियोजन हेतु इस आधार पर विचार करने के लिए आवेदन करता है कि वह परिस्थितिवश परीक्षा में शामिल नहीं हो सका था और इंस्टीट्यूट को संतुष्टि हेतु अपेक्षित लिखित प्रमाण प्रस्तुत करता है, तो इंस्टीट्यूट अगली होने वाली परीक्षा में उन्हीं प्रश्नपत्रों के लिए जिनमें उसका नाम दर्ज है, के लिए देय फीस हेतु उसके द्वारा भुगतान किए गए शुल्क के पचास प्रतिशत के विनियोजन की अनुमति दे सकता है।

55ड. परीक्षा केन्द्र में परिवर्तन—परीक्षा केन्द्रों में परिवर्तन पर सामान्यतया विचार नहीं किया जायेगा और यदि विचार किया जायगा तो परिषद द्वारा इस प्रयोजन हेतु समय-समय पर निर्धारित शुल्क लिया जायगा। परन्तु शर्त यह है कि परीक्षा प्रारम्भ होने की तारीख से पूर्व 15 दिन के अन्दर प्राप्त आवेदन पर परिषद द्वारा विचार नहीं किया जायेगा।

55ड. शोध-प्रबन्ध/परियोजना रिपोर्ट:—(1) कोई भी अभ्यर्थी पूंजी बाजार और वित्तीय सेवाएं पाठ्यक्रम भाग-1 में अर्हता प्राप्त करने के बाद उक्त पाठ्यक्रम के भाग 1 परीक्षा की अर्हता की तारीख के छः महीने पहले या दो वर्ष बाद (अर्थात् छः महीने से पहले नहीं और दो साल के बाद नहीं) पंजीकरण की अवधि के अन्दर समिति द्वारा अनुमोदित विषय पर शोध प्रबन्ध परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा।

परन्तु शर्त यह है कि समिति उन मामलों में शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत करने का समय बढ़ा सकती है, जहां,

- (i) कोई अभ्यर्थी परीक्षा में अर्हता की तारीख से दो वर्ष के अन्दर शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत नहीं कर पाता है; या
- (ii) उप विनियम (1) के अन्तर्गत किसी अभ्यर्थी द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट पर निर्णायकों की सलाह पर संशोधन अपेक्षित है।
- (iii) कोई अभ्यर्थी विनियम 55छ के उपविनियम (3) के परन्तुक के अन्तर्गत अपने पंजीकरण को नवीकरण करने के बाद पंजीकरण अवधि के दौरान अपना शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत नहीं कर पाता है।

(2) अभ्यर्थी शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट के सार के साथ इंस्टीट्यूट के गाइडों के पैनल में से एक या अधिक गाइडों के नाम प्रस्तुत करेगा। सार में प्रस्तावित शोध-प्रबन्ध/परियोजना रिपोर्ट के व्योरे शामिल होंगे, इसके अतिरिक्त उसमें परिलक्षित समस्याओं, उनकी पूंजी बाजार और वित्तीय सेवाओं से प्रासंगिकता, आंकड़े और प्रयोग किए जाने वाली कार्य-प्रणाली तथा इस प्रकार परिलक्षित समस्याओं के संबंध में सुझाव और सिफारिशें भी शामिल होंगी।

परन्तु यह कि कोई अभ्यर्थी समिति के पूर्व अनुमोदन से ऐसे गाइड को चुन सकता है जो कि इंस्टीट्यूट के गाइडों के पैनल में से नहीं है।

(3) शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट परिषद द्वारा समय-समय पर निर्धारित शुल्क के साथ, जो कि वापस नहीं होगा, प्रस्तुत किया जाएगा।

(4) अभ्यर्थी शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट की अंग्रेजी में पांच स्वच्छ टाइप या मुद्रित की गई प्रतियां प्रस्तुत करेगा जिसमें उसके अनुसंधान के परिणाम सनिविष्ट होंगे।

परन्तु यह कि परिषद के लिए यह यथेष्ट होगा कि वह ऐसी शर्तों के अधीन जो यह ठीक समझे और अभ्यर्थियों को पर्याप्त सूचना देने के बाद शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट लिखने के लिए हिन्दी माध्यम का प्रयोग करने की अनुमति दें।

(5) अभ्यर्थी इसके अतिरिक्त एक वक्तव्य भी प्रस्तुत करेगा जिसमें यह निर्दिष्ट होगा कि किन स्रोतों से उसने सूचना प्राप्त की है और किस सीमा तक उसका कार्य दूसरों के कार्य पर आधारित है और यह भी सूचित करेगा कि उसके कार्य का कौन-सा भाग है जिसका वह मौलिक होने का दावा करता है।

(6) समिति शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट को इसके द्वारा नियुक्त निर्णायकों को उनकी इस सलाह के लिए भेजेगी, क्या शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट काफी उच्च

श्रेणी की गुणवत्ता की है, जो कि अनुमोदन योग्य है। क्या इसमें संशोधन किया जा सकता है, यदि हां, तो इसकी विधि क्या होगी या क्या इसे अस्वीकार किया जा सकता है।

(7) यदि कोई अभ्यर्थी यथास्थिति शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट या साक्षात्कार में विनियम 55त में विनिर्दिष्ट न्यूनतम उत्तीर्ण अंक प्राप्त करने में असफल रहता है, तो वह अपने विकल्प पर या तो वही शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट उसमें किए गए संशोधनों और सुधारों सहित पुनः प्रस्तुत कर सकता है या यथास्थिति या इस अध्याय में समाविष्ट उपबंधों के अनुसार दूसरा शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत कर सकता है और अपेक्षित उत्तीर्ण अंक प्राप्त कर लेने पर, उसे दूसरे साक्षात्कार में उपस्थित होना अपेक्षित होगा जैसा कि इस अध्याय में प्रावधान है।

(8) यदि कोई अभ्यर्थी—

- (i) उप-विनियम (1) में विनिर्दिष्ट अवधि के अन्दर यथास्थिति शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत करने, या
- (ii) उपविनियम (1) में विनिर्दिष्ट अवधि के अन्दर शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट को यथास्थिति निर्णायकों द्वारा परामर्श दिए गए संशोधनों को उसमें समाविष्ट करते हुए पुनः प्रस्तुत करने; या
- (iii) विनियम 55छ के उपविनियम (3) के परन्तुक के अन्तर्गत अपने पंजीकरण को नवीकरण करने के बाद पंजीकरण अवधि के दौरान अपना शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत करने में असफल रहता है, उसका पंजीकरण इस अध्याय के अन्तर्गत रद्द हो जाएगा।

बशर्ते कि समिति स्वविवेक से परिषद द्वारा यथा निर्धारित शुल्क सहित अभ्यर्थी से आवेदन की प्राप्ति पर पंजीकरण का नवीनीकरण कर सकता है और उन आवेदनों को छोड़कर जिन पर विचार नहीं किया गया शुल्क वापस नहीं किया जाएगा और पंजीकरण का नवीनीकरण हो जाने पर अभ्यर्थी बिना किसी छूट शुल्क के उसके द्वारा पहले उत्तीर्ण किए गए विषयों से छूट का हकदार होगा।

55ण साक्षात्कारः—अभ्यर्थी को समिति द्वारा इस निमित्त नियुक्त साक्षात्कार बोर्ड के समक्ष शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट पर साक्षात्कार के लिए उपस्थित होना अपेक्षित होगा। 55त पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने के लिए अपेक्षाएं—

(1) पूंजी बाजार और वित्तीय सेवाएं परीक्षा के लिए किसी अभ्यर्थी को परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ घोषित किया जाएगा;

(क) परीक्षा के भाग 1 में यदि वह दोनों समूह को एक साथ ही उत्तीर्ण किया हो या किसी एक समूह में एक परीक्षा में और शेष समूह में बाक की परीक्षा में एक ही बार

में समूह के प्रत्येक प्रश्न-पत्र में कम से कम चालीस प्रतिशत अंक और उस समूह के सभी प्रश्न-पत्रों में कुल अंकों का न्यूनतम कुल मिलाकर 50 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हों।

(ख) परीक्षा के भाग II में, यदि वह शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट में यथास्थिति कुल अंकों का न्यूनतम साठ प्रतिशत और साक्षात्कार में न्यूनतम साठ प्रतिशत अंक प्राप्त कर लेता है। शोध-प्रबन्ध और परियोजना रिपोर्ट दोनों में या साक्षात्कार में यथास्थिति न्यूनतम उत्तीर्ण अंक प्राप्त न करने पर शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट में किए गए संशोधनों और सुधारों सहित इसे पुनः प्रस्तुत करना आवश्यक होगा या दूसरा शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत करना होगा। उक्त दोनों मामलों में इस अध्याय में विनिर्दिष्ट साक्षात्कार भी लिया जाएगा।

(2) व्यक्तिगत सूचना :—प्रत्येक अभ्यर्थी को पाठ्यक्रम के भाग 1 के प्रत्येक प्रश्न पत्र में प्राप्त अंकों और तत्संबंधी परीक्षाफल के बारे में व्यक्तिगत तौर पर सूचित किया जाएगा। किन्तु किसी भी परिस्थिति में प्रश्न विशेष या किसी प्रश्न पत्र के खंड में प्राप्त अंक प्रस्तुत नहीं किए जाएंगे।

(3) अंकों का सत्यापन :—किसी परीक्षा में किसी प्रश्न-पत्र विशेष में या प्रश्नपत्रों में से अभ्यर्थी के प्रत्येक प्रश्न के उत्तर को उचित रूप से जांचा गया है और अंकित किया गया है या नहीं इसके बारे में सूचना उक्त परीक्षा के परीक्षाफल की घोषणा के तीस दिनों के अन्दर अभ्यर्थी द्वारा परिषद द्वारा समय-समय पर निर्धारित सत्यापन शुल्क के साथ आवेदन प्रस्तुत करने पर अभ्यर्थी को दी जाएगी।

स्पष्टीकरण—इस उपविनियम में उल्लिखित शुल्क उत्तरों के पुनर्मूल्यांकन के लिए न हो कर केवल इस बात का सत्यापन करने के लिए है कि क्या किसी प्रश्न पत्र विशेष या प्रश्नपत्रों में अभ्यर्थी के उत्तरों की जांच और मूल्यांकन कर लिया गया है।

55थ परीक्षक :—समिति प्रश्नपत्र तैयार करने और उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन के लिए ऐसी व्यवस्था कर सकती है तथा ऐसे परीक्षकों की नियुक्ति कर सकती है जैसा वह ठीक समझे।

55द परीक्षाफल में संशोधन :—किसी मामले में यदि यह पाया जाता है कि किसी परीक्षा का परीक्षाफल किसी गलती, अनाचार, कपट, अनुचित आचरण या किसी भी प्रकृति के अन्य मामले के कारण प्रभावित हुआ है, तो समिति को ऐसे परीक्षाफल को इस रीति से संशोधित करने का अधिकार होगा जो कि वास्तविक स्थिति के अनुसार ही हो और ऐसी घोषणा कर सकती है जैसा समिति उस निमित्त ठीक समझे।

55ध. डिप्लोमा प्रमाण पत्र प्रदान करना :—इस अध्याय के अंतर्गत किसी अभ्यर्थी द्वारा पूंजी बाजार तथा वित्तीय सेवाएं विषयक पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा करने

पर, इंस्टीट्यूट द्वारा समुचित फार्म में इस आशय का डिप्लोमा प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाएगा और वह “(डी सी एम एफ एस) (आई सी एस आई)” वर्णनात्मक शब्द एवं कोष्ठक का प्रयोग करने का पात्र होगा जो इस बात का सूचक होगा कि उसे दि इंस्टीट्यूट ऑफ कम्पनीज सेक्रेटरीज ऑफ इंडिया द्वारा पूंजी बाजार और वित्तीय सेवाओं में सदस्यता पश्चात डिप्लोमा प्रदान किया गया है।

(ख) अनुसूची “सी सी ए” के बाव निम्नलिखित अनुसूची को समाविष्ट किया जाए, अर्थात्—

अनुसूची “घ”

विनियम 55ग (3)

पूंजी बाजार तथा वित्तीय सेवा परीक्षा में सदस्यता पश्चात डिप्लोमा के लिए भाग 1 का पाठ्य-विवरण।

समग्र उद्देश्य और कार्य-क्षेत्र :—इस डिप्लोमा पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सदस्यों को निगमित वित्त के विभिन्न पहलुओं से संबंधित प्रभावी निगमित प्रबन्धन और वृहत आधारित सचिवीय पद्धति के लिए कुशाग्र बुद्धि, सूक्ष्म दृष्टि और पूर्ण जानकारी प्रदान करना है। नीचे दिया पाठ्य-विवरण केवल दिशा निर्देश है और इसका अर्थ यह नहीं लगाया जाना चाहिए कि केवल उसमें सूचीबद्ध क्षेत्रों तक ही अभ्यर्थी को सीमित रहना है। अभ्यर्थियों से उभरती हुई वित्तीय पद्धतियों, वित्तीय सेवाओं के परिवेश, वित्तीय बाजारों की गतिविधियों, वित्तीय इंजीनियरिंग, और वित्तीय परिवर्तन, नए निर्गमों, प्रबन्धन, वित्त आधारित परिसम्पत्तियों, क्रेडिट रेटिंग, निगमित सलाहकार सेवाओं के प्रबन्धन, नवीन वित्तीय उत्पादों, विवेशक संबंधों, यूरो इश्यो विभिन्न वित्तीय और पूंजी बाजारों संस्थानों की कार्य प्रणाली, व्यापार, घरेलू तथा वित्तीय बाजारों में संचार पद्धतियों की पूर्ण जानकारी रखने की आशा की जाती है। अभ्यर्थियों से यह भी आशा की जाती है कि उन्हें आर्थिक प्रवृत्तियों निवेश नितियों, ताकि सम्पूर्ण ढांचा जिसके अन्तर वित्तीय पद्धतियां कार्य करती हैं कि समेकित दृश्य की जानकारी रहे। भारत तथा अन्य अन्तर्राष्ट्रीय वित्त बाजारों में कानूनी एवं विनियमित संरचना की जानकारी तथा क्रियाविधिक सचिवीय तथा प्रलेखन पहलू भी इस पाठ्य-क्रम का भाग है। अभ्यर्थी को वित्तीय योजना तथा निर्णय लेने में तकनीकी तथा विश्लेषणात्मक कौशल से सुसम्पन्न होना चाहिए। अभ्यर्थियों से यह भी आशा की जाती है कि वे उन क्षेत्रों पर भी शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत करें जिनका उन्हें व्यावहारिक अनुभव रहा है और यह कि शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट व्यावहारिक पहलुओं पर ही होनी चाहिए।

प्रत्येक प्रश्न पत्र 100 अंकों का होगा तथा परीक्षा की अवधि तीन घंटे की होगी। परीक्षा का माध्यम अंग्रेजी होगा, परन्तु परिषद के लिए यह यथेष्ट होगा कि वह ऐसी शर्तों के अधीन जैसा कि वह ठीक समझे तथा अभ्यर्थियों को पसंद

पूर्व सूचना देने के बाद किसी प्रश्न-पत्र विशेष के उत्तर देने में हिन्दी माध्यम का प्रयोग करने के लिए अनुमति दे सकता है।

समूह 1 प्रश्न-पत्र (1 और 2)

प्रश्न-पत्र 1

वित्तीय प्रबंध—संकल्पना मुद्दे तथा व्यवहार

उद्देश्य का कार्य क्षेत्र :—निगम वित्तीय प्रबंध के विविध आयामों के गहन अध्ययन की व्यवस्था करना

विस्तृत विषय सूची :—वित्तीय प्रबंध पर विहंगम दृष्टि :—वित्तीय प्रबंध का परिवेश—गतिशील तथा क्रियाकरो, वित्तीय प्रबंध के कार्य, वित्तीय प्रबंध के लक्षण, वित्तीय प्रबंधकों का उत्तरदायित्व।

2. वित्तीय पूर्वानुमान तथा योजना :—निधि स्रोतों का पूर्वानुमान, रोक्ड़ पूर्वानुमान, परियोजित लाभ तथा हानि के लेखा तथा तुलन-पत्र।

3. पूंजी की संरचना तथा निधियों की उगाहना :—परियोजना के लिए निधि जुटाना, आधुनिकीकरण तथा विस्तार, नवीनीकरण तथा पुनर्वास, अतिरिक्त पूंजी व्यय, कामकाज पूंजी के लिए निधियों, पूंजी की संरचना तथा लागत, प्रोस्पेक्टस का प्रारूपण; प्रतिभूतियों के निर्गमन से सम्बन्धित विनियमों की अनुपालना—मूल्य औचित्य, शेयर पूंजी का निर्गमन—इक्विटी, अधिमाती, राइट्स तथा बोनस डिबेंचरों का निर्गमन; भारतीय प्रतिभूति तथा एक्सचेंज बोर्ड के मार्गदर्शी सिद्धांत, वित्तीय बिबौलिए, अन्डर राइटिंग, रेटिंग, प्रवर्तकों का योगदान, न्यास का सृजन, डिबेंचर उन्मोचन निधि का सृजन आदि।

उत्पाद संरचना और मूल्य निर्धारित करना, शेयर-कीमतों के बृहद् आर्थिक निर्धारण तत्व।

4. कामकाज पूंजी प्रबंध :—वाणिज्यिक बैंकों से कामकाज पूंजी वित्त; विभिन्न समितियों की सिफारिशों, भारतीय रिजर्व बैंक के सामान्य मार्गदर्शी सिद्धांत, अग्रणी बैंक तथा सहायता संघ के बैंक, साख-मूल्यांकन, स्वीकार्य बैंक वित्त, रेहन रखना, करार, आहरण की शक्ति, आवधिक रिपोर्टें—रिपोर्टों की प्रकृति—बैंकों द्वारा निरीक्षण।

5. अन्तरराष्ट्रीय वित्त प्रबंध—विहंगम दृष्टि—अन्तर-राष्ट्रीय कर प्रबंध—राजनीतिक जोखिम का मापन कार्य तथा प्रबंध—विदेशी निवेश निर्णय, विदेशी निवेश तथा वित्तीय संरचना के लिए पूंजी की लागत, विदेशी विनियम अधिनियम, 1973 तथा उसके अन्तर्गत बनाए गए नियमों की अनुपालना।

6. वित्तीय प्रबंध का विलय, सम्मेलन, अधिग्रहण तथा अर्जन :—भारतीय प्रतिभूति तथा विनियम बोर्ड के मार्गदर्शी सिद्धान्तों के उद्देश्य।

7. आन्तरिक तथा बाह्य वित्तपोषण—साख नीतियों तथा वसूली पद्धति—लाभांश का निर्णय करना—लाभांश नीति को प्रभावित करने वाले कारक तथा नीतियों, कर तथा लास प्रतिकूल—बोनस शेयर तथा स्टॉक विभाजित करना।

8. परियोजनाओं का कार्यान्वयन तथा मोनिटरिंग करना :—वित्तीय संस्थानों द्वारा परियोजना की अनुमति, नई औद्योगिक नीति के अन्तर्गत शर्तें तथा लाइसेंस, अखिल भारतीय वित्तीय संस्थानों के मानक, पर्यावरण अनुमति सहित अन्य सांविधिक अनुमति, वित्तीय संस्थानों द्वारा अनुमोदन देने से पूर्व तथा अनुमोदन देने के पश्चात् उठाये जाने वाले कदम-ऋण करार पर हस्ताक्षर, कार्यान्वयन के दौरान रिपोर्टों की अनुपालना, परियोजना आंकलन तथा पूरक ऋण यदि कोई हो, का पुनरीक्षण, 100 प्रतिशत निर्यातानुमुखी यूनिटों के लिए छूट सहित उपलब्ध कर छूट।

9. रुग्ण उद्योगों का पुनरुद्धार :—रुग्ण औद्योगिक कम्पनी (विशेष उपबन्ध) अधिनियम, 1985 के अन्तर्गत अनिवार्यता—रुग्ण कम्पनियों की परिभाषा—औद्योगिक तथा वित्तीय पुनर्निर्माण बोर्ड की भूमिका—आपरेटिंग एजेंसियों की भूमिका—आपरेटिंग एजेंसियों द्वारा की गई सिफारिशों की प्रकृति, इच्छुक पक्षों द्वारा अभ्यावेदन पुनरुद्धार के लिए छूट, औद्योगिक रुग्णता का प्रबंध, रुग्णता के लक्षण, रुग्ण उद्योगों में अप्रवासी भारतीयों (एन आर आई) के निवेश और विशेष उपबन्ध, रुग्ण उद्योगों के सम्मेलन के लिए आयकर का लाभ आदि।

प्रश्न-पत्र—II

वित्तीय सेवाएं, वित्तीय बाजार तथा वित्तीय उत्पाद

उद्देश्य, तथा कार्य क्षेत्र :—अवधारणाओं, मुद्दों तथा व्यवहार जो कि लक्ष्य बाजारों में वित्तीय सेवाओं के उपबन्धों तथा प्रभावी रूप-रेखा को शासित करते हैं, की विस्तृत सूक्ष्म-दृष्टि प्रदान करना।

व्योरेवार विषय सूची :

भाग 'क'—वित्तीय सेवाएं

वित्तीय सेवाओं की प्रकृति तथा कार्यक्षेत्र :—वित्तीय सेवाएं प्रदान करने वाले संस्थान, वित्तीय सेवा के प्रकार, भविष्य में आने वाली चुनौतियां।

नई वित्तीय सेवाएं, उद्यम पूंजी, उद्भव; मुख्य लक्षण, उद्यम पूंजी निधियों का प्रशसन, संयुक्त राज्य अमेरिका में उद्यम पूंजी का अनुभव, जोखिम का वायरा, उद्यम पूंजी का सिद्धीकरण, कर तथा कानूनी पहलू।

क्रेडिट रेटिंग सेवाएं :

उपभोक्ता वित्त, क्रेडिट कार्ड, वित्तपोषण से सम्बद्ध रणनीतियां :

अचल सम्पत्ति वित्तपोषण, पट्टे पर तथा किराया—खरीद, बीमा, परियोजना वित्त-ऋण वित्तपोषण, वित्तीय सेवाओं तथा निगमित पूंजी संरचना का प्रभाव, कानूनी विविक्षाएं, वित्तीय सेवा तथा बाजार संबंधी परिवेश, वित्तीय सेवाओं का विश्लेषण, विपणन के अवसर ।

भाग "ख"—वित्तीय बाजार

वित्तीय बाजार का वर्गीकरण; निधियों का घरेलू और अन्तरराष्ट्रीय प्रवाह, भारतीय मुद्रा बाजार तथा इसकी मुख्य विशेषताएं, संगठन, प्रचालन तथा विनियमित तंत्र ।

नया निर्गमन बाजार, भारत में स्टॉक एक्सचेंज तथा ओवर द काउन्टर एक्सचेंज ऑफ इंडिया (ओ टी सी ई आई) का क्रमिक विकास, संस्थागत तथा यांत्रिक आविष्कार, भारतीय राष्ट्रीय स्टॉक एक्सचेंज लि., स्टॉक होल्डिंग कार्पो. ऑफ इंडिया लिमिटेड; निक्षेप सम्बन्धी पद्धतियां ।

समूह II प्रश्न-पत्र (III, IV और V)

प्रश्न पत्र—III

प्रतिभूति मूल्यांकन और निवेश प्रबन्ध :-

उद्देश्य तथा कार्यक्षेत्र :

इस प्रश्न पत्र का उद्देश्य सहभागियों को विभिन्न वित्तीय लिखितों की परिणात्मक एवं गुणात्मक तकनीकों के मूल्यांकन तथा बांछित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निवेश सम्बन्धी कार्य नीति में उनके एकीकरण से अच्छी तरह अवगत कराना ।

व्योरेवार विषय सूची :

भाग "क"—प्रतिभूति मूल्यांकन

वित्तीय पहलुओं का निवेश माध्यम के रूप में विशेष विशेषता; प्रतिभूति मूल्यांकन की प्रकृति, निवेश विकल्प, ऋण, इक्विटी, मिश्रित, भविष्य, विकल्प आवि, ट्रेड ऑफ रिस्क रिटर्न, भारत में वित्तीय सूचना के स्रोत; प्रतिभूति मूल्यांकन का दृष्टिकोण, मौलिक/ई आई सी विश्लेषण, तकनीकी विश्लेषण, दक्ष पूंजी बाजार मूल्यांकन, परिसम्पत्ति मूल्य-निर्धारण सिद्धांत, सार्वजनिक क्षेत्र-शेयरों की बेचना तथा उन्नती कीमत, संगणना में प्रगति, प्रतिभूति विश्लेषण की संसूचना तथा कानून संबंधी परिवेश ।

भाग "ख"—निवेश प्रबन्ध

स्वस्थ निवेश प्रबन्ध के सिद्धांत, ट्रेड ऑफ रिटर्न में प्रबन्धकीय जोखिम; विविधीकरण की अवधारणा तथा निवेश प्रबन्ध में इसकी प्रायोज्यता, प्रतिभूति संविभाग, मार्क विज तथा शार्प का योगदान, अनुवर्ती गतिविधियां (विहंगम दृष्टि) निवेश, परामर्श तथा ग्राहक सेवा, निवेशक संरक्षण ।

प्रश्न-पत्र—IV

पोर्टफोलियो मैनेजमेंट और पारस्परिक निधि उद्देश्य और कार्यक्षेत्र :

पोर्टफोलियो मैनेजमेंट और पारस्परिक निधियों की कार्य प्रणाली पर सुविज्ञ जानकारी प्रदान करना है ।

व्योरेवार विषय सूची :

भाग "क"—पोर्टफोलियो मैनेजमेंट

परम्परागत सिद्धांत, पोर्टफोलियो मैनेजमेंट के उद्देश्य, पोर्टफोलियो मैनेजमेंट के सिद्धांत और व्यवहार, पोर्टफोलियो मैनेजमेंट में इस्तेमाल की जानेवाली तकनीक, दक्ष विपणन सिद्धांत, पूंजीगत परिसम्पत्ति मूल्य आदर्श (सी पी ए एम), पोर्टफोलियो मैनेजमेंट का संस्थागत व्यवहार, स्टॉक बाजार मूल्य का व्यवहार, निवेश कार्य नीति, अंतरपणन मूल्य सिद्धांत, पोर्टफोलियो की विविधता, भारत में कर लाभ योजना पर एक विहंगम दृष्टि ।

भाग "ख"—पारस्परिक निधियां

पारस्परिक निधि का अर्थ, पोर्टफोलियो का वर्गीकरण, पारस्परिक निधियों के प्रकार, लाभ एवं हानियां, पारस्परिक निधियों का चालू किया जाना, परिसम्पत्ति प्रबन्ध कम्पनी (ए एम सी) के संगम ज्ञापन और अनुच्छेद का प्रारूपण, पारस्परिक निधियों द्वारा निधियों का संघयन, पारस्परिक निधि कंपनियों का प्रचालन, निवेशक संरक्षण के लिए न्यास विलेख तथा उपबंध, पारस्परिक निधि का अभिरक्षक, निवेश कार्यनीति के कार्य और प्रमुख विशेषताएं, विपणन प्रक्रिया कानूनी और लेखाकर्म पहलू, न्यासियों के अधिकार एवं शक्तियां, निष्पादन मूल्यांकन, अनिवासी भारतीयों की पारस्परिक निधियां, पारस्परिक निधियों का विनियमन ।

प्रश्न-पत्र—V

अन्तरराष्ट्रीय वित्तीय प्रबन्ध :-

संकल्प, पूंजी बाजार और साधन (इंस्ट्रुमेंट्स) उद्देश्य तथा क्षेत्र : अन्तरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थान, मुद्रा बाजार, विनिमय संव्यवहार एवं पूंजी बाजार जिसके अन्दर कार्य करते हैं की संकल्पनात्मक रूप रेखा प्रदान करना ।

व्योरेवार विषय सूची :

भाग क—अन्तरराष्ट्रीय वित्तीय प्रबन्ध की सामान्य रूपरेखा—संकल्पनात्मक रूपरेखा

अन्तरराष्ट्रीय वित्तीय प्रबन्ध, अन्तरराष्ट्रीय वित्तीय प्रबन्ध के प्रमुख मुद्दे, विदेशी विनिमय बाजारों, विदेशी निवेशों का विश्लेषण, परियोजनाएं, विदेशी विनिमय वित्त व्यवस्था, वित्तीय और भीमित निर्यातों के निर्यात आयात बैंक व निर्यात उधार और प्रत्याभूति निगम की भूमिका—वस्तु-विनिमय व्यापार, अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा का चुनाव,

अन्तरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थान—विश्व बैंक एवम् इससे सम्बद्ध संस्थान, प्राइवेट अन्तरराष्ट्रीय वित्तीय बाजार, अन्तरराष्ट्रीय निवेश निर्णय; अन्तरराष्ट्रीय साधन (इंस्ट्रूमेंट) एवं विशेषता; यूरो बांड बाजार इंस्ट्रूमेंट; विनिमय दर पद्धति और सिद्धांत; विनिमय जोखिम के विरुद्ध; सीमा—पार वित्त; नये विपणन इंस्ट्रूमेंट, अन्तरराष्ट्रीय बाजार में धन एवं बैंकिंग यूरो बांडों की विपणन की प्रक्रिया; यूरो बांड बाजार में निधियों के स्रोत, अन्तरराष्ट्रीय संव्यवहार एवं कर व्यवहार विदेशी मुद्रा संव्यवहार, भारत में उपभोक्ता दरें, एल ई आर एम एस, विदेशी विनिमय और मुद्रा बाजार प्रक्रिया पर विहंगम दृष्टि ।

भाग—ख—संस्थागत वित्तीय प्रबन्ध में अनुप्रयुक्त पहलू :—

पूंजी बाजार का अन्तरराष्ट्रीयकरण, अन्तरराष्ट्रीय पूंजी बाजार (संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, यूरोपीय देशों, एशियाई और जापानी पूंजी बाजारों) की कार्यप्रणाली, विदेशी प्रतिभूतियों में निवेश; अन्तरराष्ट्रीय पोर्टफोलियो मैनेजमेंट; अन्तरराष्ट्रीय पूंजी प्रवाह; विद्यमान और उभरते अवसर ।

डॉ. एस. पी. नारंग, सचिव

पाद टिप्पणी : मुख्य अधिसूचना आई सी एस आई सं. 710 : 2(1) दिनांक 16 सितम्बर, 1982 में प्रकाशित हुए थे और बाद में निम्नलिखित अधिसूचनाओं द्वारा संशोधित हुए थे, देखिए :—

- (i) अधिसूचना सं. आई सी एस आई/710/2/एम (1) दि. 30-3-1984
- (ii) अधिसूचना सं. आई सी एस आई/710/2/एम (1) दि. 3-5-1984
- (iii) अधिसूचना सं. 710 : 2 : एम (1) दि. 30-12-85
- (iv) अधिसूचना सं. 710 : 2 : एम (1) दि. 9-9-1986
- (v) अधिसूचना सं. 710 : 2 : एम (1) दि. 23-2-1987
- (vi) अधिसूचना सं. 710 : 2 : एम (1) दि. 9-3-1987
- (vii) अधिसूचना सं. आई सी एस आई/710/(2) (एम) (2) दि. 22-8-1988
- (viii) अधिसूचना सं. आई सी एस आई/710(2) (एम)/2 दि. 23-8-1988
- (ix) अधिसूचना सं. 710/1/(एम)/(18) दि. 20-8-1993 एवं 24-11-1993

THE INSTITUTE OF COMPANY SECRETARIES OF INDIA

NOTIFICATION

New Delhi, the 21st February, 1995

No. 710/1(M)/17.—Whereas the draft regulations further to amend the Company Secretaries Regulations, 1982 were published as required by sub-section (3) of section 39 of the Company Secretaries Act, 1980 (56 of 1980) in the Gazette of India Extraordinary, Part III, Section 4 dated the September 20, 1994 under the notification of the Institute of Company Secretaries of India for inviting objections and suggestions from all persons likely to be affected thereby before the expiry of forty-five days of the date on which the copies of the said notification as published in the Gazette of India were made available to the public;

And whereas copies of the said Gazette were made available to the public on the 29th September, 1994;

And whereas the objections and suggestions received from the public have been considered by the Council;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 39 of the Company Secretaries Act, 1980 (56 of 1980), the Council, with the approval of the Central Government, hereby makes the following regulations further to amend the Company Secretaries Regulations, 1982, namely :—

1. (1) These regulations may be called the Company Secretaries (Amendment) Regulations, 1995.

(2) These regulations shall come into force on the date of their publication in the Gazette of India.

2. In the Company Secretaries Regulations, 1982.—

(a) after regulation 55A in Chapter VII, the following shall be inserted, namely :—

“CHAPTER VIIA

POST QUALIFYING COURSES AND EXAMINATIONS

55B. Post Qualification Courses and Examinations.—The Council may impart or arrange to impart practical and/or theoretical training and hold examinations in such subjects as it may consider useful for members and may award certificates or diplomas in connection therewith in accordance with the provisions of this Chapter.

POST MEMBERSHIP QUALIFICATION COURSE IN CAPITAL MARKETS AND FINANCIAL SERVICES

55C. Scheme of Capital Markets and Financial Services Course.—(1) The Capital Markets and

Financial Services Course shall comprise of following two parts, namely :—

- (a) Part I of the course shall consist of Group I of 200 marks and Group II of 300 marks; and
- (b) Part II of the course shall consist of dissertation or project report of 150 marks and interview of 50 marks.

(2) The candidates for Part I examination shall be examined in five subjects comprised in two Groups each consisting of the following papers, namely :—

Group I Paper I—Financial Management—Concepts, Issues and Practices.

Paper II—Financial Services, Financial Markets and Financial Products.

Group II Paper III—Security Evaluation and Investment Management.

Paper IV.—Portfolio Management and Mutual Funds.

Paper V—International Financial Management—Concepts, Capital Markets and Instruments.

(3) The syllabus for the Part I of Capital Markets and Financial Services Course shall be as specified in Schedule D.

55D. Administration.—Notwithstanding anything contained in regulation 100, the Capital Markets and Financial Services Course shall be under the charge of a Committee constituted by the Council for the purpose under sub-section (2) of section 17 of the Act (referred to in this Chapter as the "Committee"), whose functions shall include holding of the examination, admission thereto, granting approval of dissertation or project report, appointment and selection of examiners, prescription of books for the guidance of candidates, declaration of results and other allied matters.

55E. Advisory Board.—The Committee may appoint an advisory board consisting of not more than seven persons to advise the Committee on the matters relating to the syllabus, examinations, dissertation or project report and any other matter relating to Capital Markets and Financial Services Course, as might be referred to it by the Committee.

55F. Admission to Capital Markets and Financial Services Course.—(1) No candidate shall be admitted to the Capital Markets and Financial Services Course unless he is a member at the time of admission to the said course.

(2) Any candidate applying for admission to the Capital Markets and Financial Services Course shall be required to apply in the appropriate form along with the registration fee, annual fee, if applicable and other fees as determined by the Council from time to time in respect of services to be rendered.

55G. Time limit for completing Capital Markets and Financial Services Course.—(1) **Registration period.**—Every candidate applying for admission to the Capital Markets and Financial Services Course shall be registered in accordance with regulations under this Chapter for a period of five years from the month in which his application, complete in all respects, is accepted by the Institute for registration.

(2) **Time limit for completing examination.**—A candidate registered for the course under sub-regulation (i) shall be required to complete the examination and submit dissertation or project report, as the case may be, within the registration period.

(3) **Termination of registration.**—The registration of a candidate shall terminate on the expiry of five years or at the end of the year in which the said candidate has successfully completed the Capital Markets and Financial Services Course, whichever is earlier ;

Provided that the Committee may, subject to such guidelines as may be laid down in this behalf by the Council, extend the registration period of a candidate registered under this Chapter beyond five years.

55H. Admission to Capital Markets and Financial Services Examination.—No member shall be admitted to Part I of the Capital Markets and Financial Services examination unless,—

- (a) he is registered under regulation 55G at least six calendar months prior to the month in which the examination commences, that is to say, if any examination commences in December, candidates registered upto and including May of that calendar year shall be eligible;
- (b) he applies for admission to an examination in the appropriate form, the copies of which may be made out by the candidate himself, with requisite particulars and fees as may be determined by the Council from time to time so as to reach the Institute in accordance with the directions given by the Committee.

55I. Examination requirements.—(1) Candidates registered under this Chapter shall be required to comply with such conditions relating to examinations and dissertation or project report as may be laid down by the Council from time to time.

(2) **Admission to examination, expulsion and withholding of results.**—(a) The Committee or a person authorised by it in this behalf may, for reasons to be recorded in writing,—

- (i) refuse to admit a candidate registered under regulation 55G to an examination, or
- (ii) admit him to an examination subject to such conditions as it or he may consider to be reasonable in the circumstances of a case ; or
- (iii) expel him from an examination hall after he has been admitted to it in the usual course.

(b) Notwithstanding the fact that a candidate has obtained the minimum marks for passing an examination, the Committee may, for reasons to be recorded in writing, withhold the result.

(c) Any order passed by the person authorised by the Committee may be reviewed by it and any order passed by the Committee may be reviewed by the Council.

55J. Suspension or cancellation of examination or dissertation or project report results or registration.—In the event of any misconduct by a candidate registered under this Chapter, the Council or the Committee may suo motu or on receipt of a complaint, if it is satisfied that, the misconduct is proved after such investigation as it may deem necessary and after giving such candidate an opportunity to state his case suspend or debar the candidate from appearing in any one or more examinations or from submission of dissertation or project report, withhold or cancel his examination or dissertation or project report result or suspend or cancel his registration and debar him from future registration under this Chapter as the case may be.

Explanation.—Misconduct for the purposes of this regulation shall mean and include behaviour in a disorderly manner in relation to the Institute or in or near an examination premises, breach of any regulation, condition, guideline or direction laid down by the Institute, resorting to or attempting to resort to unfair means in connection with the writing of any examination conducted by the Institute, preparation or submission of dissertation or project report such as copying, reproduction of any material from existing literature or sources without duly acknowledging the same as may be specified by the Committee from time to time.

55K. Conduct of an Examination.—(1) The examination may be conducted at such intervals, in such manner and at such time and places, as the Council may decide subject to availability of such minimum number of candidates enrolling for the examination as may be determined by the Committee from time to time.

(2) The dates and places of the examination and other particulars shall be published in the journal.

55L. Refund or appropriation of examination fees.—(1) A candidate once issued with an admission certificate for an examination shall not be entitled under any circumstances to refund of the examination fees paid by him.

(2) Where, however, a candidate applies to the Institute within fifteen days from the last date of examination for considering appropriation of examination fee to the next examination on the ground that he was prevented from attending the examination on account of circumstances beyond his control, and furnishes requisite documentary proof and information to the satisfaction of the Institute, the Institute may permit fifty per cent of the examination fees paid by him to be appropriated towards the fees payable for the next following examination for the same papers for which he was enrolled.

55M. Change of examination centre.—Applications for change of examination centres shall not ordinarily be entertained and if entertained a fee—as may be determined by the Council from time to time be charged for the purpose :

Provided that no application received within fifteen days before the date of commencement of an examination shall be entertained by the Council.

55N. Dissertation or project report.—(1) A candidate after qualifying Part I of the Capital Markets and Financial Services Examination, shall submit not earlier than six months and not later than two years from the date of qualifying Part I examination of the said course, a dissertation or a project report on a subject to be approved by the Committee within the registration period :

Provided that the Committee may extend time for submission of dissertation or project report in cases where,—

- (i) a candidate fails to submit his dissertation or project report within two years from the date of qualifying Part I examination; or
- (ii) the dissertation or project report submitted by a candidate under sub-regulation (1) requires modification on the advice of the reference;
- (iii) a candidate fails to submit his dissertation or project report during his registration period after he has obtained renewal of his registration under proviso to sub-regulation (3) of regulation 55G.

(2) The candidate shall submit the name of one or more guides from the panel of guides maintained by the Institute along with the synopsis of dissertation or project report giving therein details about the proposed dissertation or project report which shall include the problems identified, their relevance to the Capital Markets and Financial Services, the data and methodology to be used and suggestions or recommendations in relation to the problems so identified:

Provided that a candidate may opt, with the prior approval of the Committee, for a guide not included in the panel of guides maintained by the Institute.

(3) The dissertation or project report shall be submitted along with such non refundable fees as may be determined by the Council from time to time.

(4) The candidate shall submit in English five neatly type-written or printed copies of the dissertation or project report embodying the results of his research:

Provided that it shall be competent for the Council to permit, subject to such conditions as it may deem fit and after giving sufficient advance information to the candidates the use of Hindi as a medium of writing the dissertation or project report.

(5) The candidate shall further submit a statement indicating the sources from which his information has been derived and the extent to which he has based his work on the work of others and shall indicate which portion or portions of his work he claims as original.

(6) The Committee shall forward the dissertation or project report to the referees appointed by it or their advice whether the dissertation or project report is of a sufficiently high degree of merit as to deserve approval or whether it may be modified and if so, in what manner or whether it may be rejected.

(7) If a candidate fails to obtain the minimum pass marks specified in regulation 55P either in the dissertation or project report, as the case may be, or in the interview, he may at his option resubmit either the same dissertation or project report with modifications and improvements made therein or submit another dissertation or project report, as the case may be, in accordance with the provisions contained in this Chapter and on his attaining the required passing marks, he shall be required to appear at another interview as provided in this Chapter.

(B) If a candidate fails to,—

- (i) submit the dissertation or project report, as the case may be, within the period specified in sub-regulation (1); or
- (ii) resubmit the dissertation or project report as the case may be, incorporating therein the modifications advised by the referees within the period specified in sub-regulation (1) or within the time extended by the Committee under proviso to sub-regulation (1); or
- (iii) submit his dissertation or project report during his registration period after he has obtained renewal of his registration under proviso to sub-regulation (3) of regulation 55G,

his registration under this Chapter shall stand cancelled.

Provided that the Committee may renew the registration at its discretion on the receipt of an application from the candidate together with fee which may be determined by the Council and which shall not be refunded except where the application is not entertained and on such renewal of the registration the candidate shall be entitled to claim exemption from the subjects previously passed by him without payment of any exemption fee.

55O. Interview.—The candidate shall be required to appear for interview on the dissertation or project report before an interview board that may be appointed by the Committee in this behalf.

55P. Requirements for passing the Examination.—(1) A candidate for the Capital Markets and Financial Services Examination shall be declared to have passed.

(a) in Part I of the examination if he passes in both the Groups simultaneously or in any one Group at one examination and in the remaining Group at any subsequent examination securing at one sitting a minimum of forty per cent marks in each paper of the Group and a minimum aggregate 50 per cent of the total marks in all the papers of that Group;

(b) in Part II of the examination if he obtains a minimum of sixty per cent marks in the dissertation or project report, as the case may be, and a minimum of sixty per cent marks in the interview. Failure to obtain the minimum pass marks either in the dissertation or project report as the case may be, or in the interview will necessitate resubmission of the dissertation or project report with modifications and improvements made therein or submit another dissertation or project report followed in either case by the interview as specified in this Chapter.

(2) Individual intimation.—Every candidate shall be individually informed of the marks obtained in each paper of the Part I of the course and the result thereof but under no circumstances the marks obtained in individual questions or sections of a paper shall be furnished. The marks obtained by a candidate in Part II of the examination shall not be intimated to him unless he is declared successful in both the dissertation or project report and the interview.

(3) Verification of marks.—Information as to whether a candidate's answer to each question in any particular paper or papers at any examination have been duly examined and marked or not shall be supplied to a candidate on his submitting an application with such verification fee as may be determined by the Council from time to time within thirty days of the declaration of the results of the said examination.

Explanation.—Fee referred to in this sub-regulation is only for verifying whether the candidate's answers in any particular paper or papers have been examined and evaluated and not for revaluation of the answer.

55Q. Examiners.—The Committee may make such arrangements and may appoint such examiners to set question papers and value answer books as it may deem fit

55R. Amendment of result.—In any case where it is found that the result of an examination has been affected by an error, malpractice, fraud, improper conduct or other matter of whatever nature, the Committee shall have the power to amend such result in such manner as shall be in accord with the true position and to make such declaration as the Committee shall consider necessary in that behalf.

55S. Grant of Diploma Certificate.—A candidate successfully completing the Capital Markets and Financial Services Course under this Chapter shall be awarded a Diploma Certificate to that effect in the appropriate form by the Institute and shall be entitled to use the descriptive letters and brackets "DCMFS (ICSI)" to indicate that he has been awarded the "Post Membership Diploma in Capital Markets and Financial Services by the Institute of Company Secretaries of India.";

(b) after Schedule 'CCA', the following Schedule shall be inserted, namely :—

"SCHEDULE D

[Regulation 55C(3)]

SYLLABUS FOR PART I POST MEMBERSHIP DIPLOMA IN CAPITAL MARKETS AND FINANCIAL SERVICES EXAMINATION

Overall Objectives and Scope :

The prime object of this Diploma Course is to enable the members to gain acumen, insight and thorough knowledge relating to the various aspects of corporate finance towards effective corporate stewardship and broad based secretarial practice. The syllabus given below is merely a guideline and need not necessarily be construed to be restricted to the areas listed therein. The candidates are expected to have thorough knowledge of the emerging financial systems, environment of financial services, developments in financial markets, financial engineering and financial innovations, new issues management, asset based financing, portfolio management services, treasury management, credit rating, corporate advisory services, custodial and forex services, international finance, management of financial services, innovative financial products, investor relations, euro issues, functioning of various financial and capital market institutions, trading, communication and information systems in the domestic as well as world financial markets. The candidates are further expected to have thorough knowledge of the economic trends and investment strategies so as to have an integrated view

of the entire framework within which the financial systems operate. Knowledge of the legal and regulatory framework in India and other international financial markets as well as procedural, secretarial and documentation aspects will also form part of this curriculum. The candidates should be fully equipped with the technical and analytical skills in financial planning and decision making. The candidates will also be expected to submit dissertation or project report in the areas in which they have practical exposure and that the dissertation or project report should be on practical aspects.

Each paper will be of three hours duration and will carry 100 marks. The medium of writing the examination will be English : provided that it shall be competent for the Council to permit subject to such conditions as it may deem fit and after giving sufficient advance information to the candidates, the use of Hindi as a medium of writing any particular paper.

GROUP I PAPERS (I AND II)

PAPER I

FINANCIAL MANAGEMENT—CONCEPTS, ISSUES AND PRACTICES

Objective and Scope.—To provide an indepth study of the various dimensions of Corporate Financial Management.

Detailed Contents :

1. An overview of financial management :

Environment of financial management.—dynamic and operating, tasks of financial management, goals of financial management; responsibilities for financial managers.

2. Financial forecasting and planning :

Funds flow forecast; cash forecast; projected profit and loss account and balance sheet.

3. Capital structuring and raising of funds :

Raising funds for projects, modernisation and expansion, revamping and rehabilitation, additional capital expenditure; funds for working capital; structure and cost of capital; drafting of prospectus; compliance of regulations regarding issue of securities, price justification, issue of share capital—equity, preference, rights and bonus; issue of debentures; Securities and Exchange Board of India guidelines; financial intermediaries; underwriting, rating, promoters' contribution, creation of trust; creation of debenture redemption fund etc.

Product structure and Pricing; Macro Economic Determinants of Share Pricing.

4. Working capital management :

Working capital finance from commercial banks; recommendations of various committees; Reserve Bank of India's general guidelines; lead bank and banks in consortium; credit appraisal; permissible bank finance; hypothecation; agreement; drawing power; periodic reporting; periodicity—nature of reports—inspection by banks.

5. International finance management :

Overview—international tax management—measurement and management of political risk—foreign investment decisions, cost of capital for foreign investments and financial structure, compliance of Foreign Exchange Regulation Act, 1973 and rules made thereunder.

6. Financial management of mergers, amalgamations, takeovers and acquisitions :

Purport of Securities and Exchange Board of India's guidelines.

7. Financing—internal and external :

Credit policies and collection systems—dividend decision—policies and factors affecting dividend policy, tax and depreciation considerations—bonus shares and stock splits.

8. Project implementation and monitoring :

Approval of project by financial institutions—licensing and reservations under new industrial policy, norms of all India financial institutions, other statutory clearances including environmental clearance, steps prior to and post sanction by financial institutions—signing of loan agreements, compliance reports during implementation, revision of project estimates and supplementary loan, if any, tax concessions available—including concessions for 100% export oriented units.

9. Rehabilitation of sick industries :

Obligations under the Sick Industrial Companies (Special Provisions) Act, 1985—definition of sick company—role of Board for Industrial and Financial Reconstruction (BIFR)—role of operating agencies—nature of recommendations by operating agencies, representation by interested parties—concessions for rehabilitation, management of industrial sickness—signals of sickness, special provisions for non-resident Indian (NRI) investment in sick industries, benefits of Income-tax for amalgamation of sick industries, etc.

PAPER II

FINANCIAL SERVICES, FINANCIAL MARKETS AND FINANCIAL PRODUCTS

Objective and Scope.—To provide a detailed insight into the concepts, issues and practices that govern the effective design and provision of financial services in the target markets.

Detailed Contents :

Part A—Financial Services

Nature and scope of financial services; institutions providing financial services; type of financial services; challenges ahead.

New financial services ; venture capital, origin, characteristics, administration of venture capital funds, experience of venture capital in United States of America, United Kingdom, Japan, European Nations, spread of risk, venture capital syndication, tax and legal aspects.

Credit rating services.

Consumer finance, credit cards, strategies involved in financing.

Real estate financing, leasing and hire purchases ; insurance; project finance—debt financing; impact of financial services and corporate capital structure, legal implications; financial services and market environment; analysis of financial services, marketing opportunities.

Part B—Financial Markets

Taxonomy of financial markets; domestic and international flow of funds, Indian money market, its characteristics, organisation, operation and the regulatory mechanisms; the new issue market, stock exchanges in India and the evolution of Over the Counter Exchange of India (OTCEI) ; institutional and instrumental innovations; National Stock Exchange of India Ltd.; Stock Holding Corporation of India Ltd., Depository System.

GROUP II PAPERS (III, IV AND V)

PAPER III

SECURITY EVALUATION AND INVESTMENT MANAGEMENT

Objective and Scope.—The objective of this paper is to equip the participants with the techniques of quantitative and qualitative assessment of various financial instruments and their integration into the investment strategies for meeting the desired objectives.

Detailed Contents :**Part A—Security Evaluation**

Characterisation of financial aspects as an investment medium; nature of security evaluation; investment alternatives, debt, equity, hybrids, futures, option, fundamental/EIC analysis; technical analysis; information in India; approaches to security evaluation, fundamental/EIC analysis; technical analysis; security evaluation in efficient capital market; asset pricing theories; public sector—disinvestment of shares and pricing of the same; advancements in computation; communication and legal environment of security analysis.

Part B—Investment Management

Principles of sound investment management, managing risk return trade offs; the concept of diversification and its applicability in investment management; security portfolios, contributions of Markowitz and Sharpe, subsequent developments (an overview), investment counselling and client servicing; investor protection.

PAPER IV**PORTFOLIO MANAGEMENT AND MUTUAL FUNDS**

Objective and Scope.—To provide expert knowledge on functioning of Portfolio Management and Mutual Funds.

Detailed Contents :**Part A—Portfolio Management**

An overview of traditional theory, objectives of portfolio management, principles and practice of portfolio management, techniques involved in portfolio management, efficient market theory, modern theory capital assets pricing model (CAPM), institutional practices of portfolio management, behaviour of stock market prices, investment strategy, arbitrage pricing theory, diversification of portfolio, tax benefits schemes in India.

Part B—Mutual Funds

Meaning of mutual fund, portfolio classifications, types of mutual funds, advantages and disadvantages, flotation of mutual funds, drafting the memorandum and articles of association of asset management company (AMC), collection of funds by mutual funds, operation of mutual fund companies, trust deeds and

provisions for investors' protection, custodians of mutual fund, functions and salient features, investment strategies, marketing procedure, legal and accounting aspects, rights and powers of trustees, performance appraisal, mutual funds of Non Resident Indians, regulation of mutual funds.

PAPER V**INTERNATIONAL FINANCIAL MANAGEMENT
—CONCEPTS, CAPITAL MARKETS AND
INSTRUMENTS**

Objective and Scope.—To provide a conceptual framework within which the working of international financial institutions, money markets, exchange transactions and capital markets operate.

Detailed Contents :**Part A—General outline in International
Financial Management—Conceptual frame-
work.**

An overview of international financial management, major issues in international financial management, foreign exchange markets, analysis of overseas investment, projects, foreign exchange financing, financing and insuring exports, role of Export Import Bank and Export Credit and Guarantee Corporation—barter deals, choice of international currency, international financial institutions—world bank and affiliates, private international financial markets, international investment decisions, international instruments and characteristics, eurobond market instruments, exchange rate system and theories, exchange risks—insuring against risk, cross border finance, new marketing instruments, money and banking in international markets, procedure of marketing eurobonds, sources of funds in eurobond market, accounting and tax treatment of international transactions, foreign currency translation, customer rates in India, LERMS, foreign exchange and money market operations.

**Part B—Applied aspects in Institutional
Financial Management**

Globalisation of capital markets, working of international capital markets (United States of America, United Kingdom, European countries, Asian and Japanese capital markets) investments in foreign securities, international portfolio management; international capital flow, existing and emerging opportunities."

DR. S. P. NARANG, Secy.

NOTE :

Principal regulations were published vide notification ICSI No. 710 2(1) dated 16th September, 1982 and subsequently amended vide—

- (i) Notification No. ICSI/710/2/M(1) dated 30-3-1984.
- (ii) Notification No. ICSI/710/2/M(1) dated 3-5-1984.
- (iii) Notification No. 710 : 2 : M(1) dated 30-12-1985.

- (iv) Notification No. 710 : 2 : M(1) dated 9-9-1986.
- (v) Notification No. 710 : 2 : M(1) dated 23-2-1987.
- (vi) Notification No. 710 : 2 : M(1) dated 9-3-1987.
- (vii) Notification No. ICSI/710 (2) (M) (2) dated 22-8-1988.
- (viii) Notification No. ICSI/710 (2) (M)/2 dated 23-8-1988.
- (ix) Notification No. 710/1/(M)/18 dated 20-8-1993 and 24-11-1993.

